एगजीवेण कालाणुगमेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १ ॥

एत्थ मूलोघो किण्ण परूविदो ? ण, चउग्गइपरूवणेण तदवगमादो। णिरयगइणिद्देसो सेसगइणिसेहट्ठो।

जहण्णेण दसवस्ससहस्साणि ॥ २ ॥

तिरिक्खस्स वा मणुस्सस्स वा दसवस्ससहस्साउट्ठिदीएसु णेरइएसु उप्पज्जिदूण णिप्फिडिदस्स दसवस्ससहस्समेत्तट्ठिदिदंसणादो।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥ ३ ॥

तिरिक्खस्स वा मणुस्सस्स वा सत्तमाए पुढवीए तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिं बंधिऊण तत्थुप्पज्जिय सगट्ठिदिमणुपालिय णिप्फिडिदस्स[1] तेत्तीससागरोवममेत्तणिरयभावुवलंभादो

एक जीवकी अपेक्षा कालानुगमसे गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिमें नारकी कितने काल तक रहते हैं ? ॥ १ ॥

शंका—यहां 'मूलोघ अर्थात् गतिसामान्यकी' अपेक्षा प्ररूपणा क्यों नहीं की ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, चारों गतियोंके प्ररूपणसे उसका ज्ञान हो जाता है।

सूत्रमें नरकगतिपदका निर्देश शेष गतियोंका निषेध करनेके लिये किया है।

जीव जघन्यसे दश हजार वर्ष तक नरकगतिमें रहता है ॥ २ ॥

क्योंकि, किसी तिर्यंच या मनुष्यके दश हजार वर्षकी आयुस्थितिवाले नारकियोंमें उत्पन्न होकर वहांसे निकले जीवके नरकमें दस हजार वर्षप्रमाण स्थिति जाती है।

जीव उत्कृष्टसे तेतीस सागरोपम काल तक नरकमें रहता है ॥ ३ ॥

किसी तिर्यंच या मनुष्यके सातवीं पृथिवीमें तेतीस सागरोपमकी आयुस्थितिको बांधकर व वहां उत्पन्न होकर अपनी स्थिति पूरी करके निकले हुए जीवके तेतीस सागरोपममात्र नारकभाव पाया जाता है।

---

१ अ. स. प्रत्योः णिप्फिडदस्स इति पाठः।

पढमाए पुढवीए णेरइया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ४ ॥

'केवचिरं' सद्दो समय-खण-लव-मुहुत्त-दिवस-पक्ख-मास उडु-अयण-संवच्छर-जुग-पुव्व-पल्ल[1]-सागरोवमादीणि उवेक्खदे[2]। सेसं सुगमं।

जहण्णेण दसवाससहस्साणि ॥ ५ ॥

सुगममेदं, णिरओघम्मि परूविदत्तादो।

उक्कस्सेण सागरोवमं ॥ ६ ॥

पढमाए पुढवीए सागरोवमाउट्ठिदिं बंधिदूण पढमाए पुढवीए उप्पज्जिय सगट्ठिदिमणुपालिय णिप्पिडिदतिरिक्ख-मणुस्सेसु तदुवलंभादो। एदं पढमाए पुढवीए वुत्तजहण्णुक्कस्साउअं सीमंत-णिरय-रोरुअ-भंत-उब्भंत-संभंत-असंभंत-विब्भंत-तत्ततसि-ववक्कंत-अवक्कंत-विक्कंतसण्णिदतेरसण्हमिंदियाणं ससेडीबद्ध-पइण्णयाणं किमेवं चेव होदि आहो ण होदि त्ति? एदेसिं सव्वेसिं एदं चेव जहण्णुक्कसाउअं ण होदि, किंतु

प्रथमपृथिवीमें नारकी जीव वहां कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ४ ॥

'कितने काल तक' यह शब्द समय, क्षण, लव, मुहूर्त, दिवस, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, संवत्सर युग, पूर्व, पल्योपम व सागरोपम आदिकालमानोंकी अपेक्षा रखता है।

प्रथम पृथिवीमें नारकी जीव जघन्यसे दश हजार वर्ष तक रहते हैं ॥ ५ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, इसकी प्ररूपणा ओघ नारकियोंकी प्ररूपणामें की जा चुकी है।

प्रथम पृथिवीमें नारकी जीव उत्कृष्टसे एक सागरोपम काल तक रहते हैं ॥ ६ ॥

क्योंकि, प्रथम पृथिवीकी एक सागरोपम आयुस्थितिको बांधकर प्रथम पृथिवीमें उत्पन्न होकर व अपनी स्थितिको पूरी करके वहांसे निकलनेवाले तिर्यंच व मनुष्योंके एक सागरोपमकी नरकस्थिति पायी जाती है।

शंका--यह जो प्रथम पृथिवीकी जघन्य और उत्कृष्ट आयु बतलायी गई है सो क्या सीमन्त, नरक, रौरव, भ्रान्त, उद्भ्रान्त, संभ्रान्त, असंभ्रान्त, विभ्रान्त, तप्त, त्रसित, वक्रान्त, अवक्रान्त और विक्रान्त नामक तेरहों इन्द्रकोंकी तथा उनसे सम्बद्ध श्रेणीबद्ध और प्रकीर्णक सब बिलोंकी यही आयुस्थिति होती है, या नहीं होती ?

समाधान--प्रथम पृथिवीके उक्त समस्त बिलोंकी जघन्य और उत्कृष्ट आयु

---

१ अ. ब. स. प्रतिषु पुव्वपुव्व इति पाठः। २ मु. प्रतौ अवेक्खदे इति पाठः।

सव्वेसिं पुध पुध जहण्णुक्कस्साउअं होदि। तं जहा---

सीमंतम्मि सेसडीबद्ध-पइण्णयम्मि जहण्णमाउअं दसवस्ससहस्साणि, उक्कस्स णउदिवस्ससहस्साणि | १०००० । ९०००० | । बिदियपत्थडे णउदिवस्ससहस्साणि समयाहियाणि जहण्णमाउअं, उक्कस्सं पुण णवुदिवस्ससदसहस्साणि । ९०००००० । तदियपत्थडे जहण्णमाउअं णउदिवस्ससदसहस्साणि समयाहियाणि । ९०००००० । उक्कस्समसंखेज्जाओ पुव्वकोडीओ । चउत्थपत्थडे[1] जहण्णमसंखेज्जाओ पुव्वकोडीओ समयाहियाओ, उक्कस्सं सागरोवमस्स दसमभागो । इमं मुहं होदि अप्पत्तादो, सागरोवमं भूमी होदि बहुवरत्तादो । भूमिदो कयसरिसच्छेदादो मुहमवणिय दुविदे सुद्धसेसमेत्तियं होदि | ९/१० | । पुणो उस्सेधो दस होदि, दससु अवट्ठिदवड्ढिहाणिदंसणादो । तत्थ दससु पढमस्स वड्ढी णत्थि त्ति एगरूवमवणिय सुद्धसेसणओवट्टिदे लद्धं वड्ढि हाणिपमाणं होदि | १/१० | । एत्थ उवउज्जंति करणगाहा---

---

इतनी ही नहीं होती, किन्तु सब बिलोंकी पृथक् पृथक् जघन्य और उत्कृष्ट आयु होती है । वह इस प्रकार है---

अपने श्रेणीबद्ध और प्रकीर्णक बिलों सहित सीमन्त नामक प्रथम इन्द्रकमें जघन्य आयु दश हजार वर्ष और उत्कृष्ट आयु नब्बे हजार वर्षप्रमाण होती है | १०००० । ९०००० | । दूसरे पाथडेमें जघन्य आयु एक समय अधिक नब्बे हजार वर्ष और उत्कृष्ट नब्बे लाख वर्षप्रमाण होती है । ९०००००० । तीसरे पाथडेमें जघन्य आयु एक समय अधिक नब्बे लाख ९०००००० वर्ष और उत्कृष्ट आयु असंख्यात पूर्वकोटिप्रमाण होती है । चतुर्थ पाथडेमें जघन्य आयु एक समय अधिक असंख्यात पूर्वकोटि और उत्कृष्ट आयु एक सागरोपमके दशम भाग होती है । यही सागरोपमका दशमांस आगेके पाथडोंमें जघन्य और उत्कृष्ट आयु प्राप्त करनेके लिये 'मुख' कहलाता है, क्योंकि, वह अल्प है, तथा पूरा एक सागरोपम 'भूमि' कहलाती है, क्योंकि, वह मुखकी अपेक्षा बहुत है । भूमिको मुखके समान भागोंमें खंडित करके उसमेंसे मुखको घटादेनेपर शेष मान इतना---$\frac{10}{10} - \frac{1}{10} = \frac{9}{10}$ होता है । उत्सेध दश है, क्योंकि, (चतुर्थ आदि तेरहवें पाथडे पर्यन्त दश पाथडोंका आयुप्रमाण निकालना है) दश स्थानोंमें अवस्थित हानि-वृद्धि पायी जाती है । इन दश स्थानोंमेंसे चतुर्थ पाथडेसंबंधी प्रथम स्थानमें तो वृद्धि है नहीं इसलिये एकको दशमेंसे घटाकर शेष नौका नौ बटे दशमें भाग देनेसे जो लब्ध आता है वह वृद्धि-हानिका प्रमाण होता है । (१० - १ = ९; $\frac{9}{10} \div 9 = \frac{1}{10}$) । यहां निम्न करण गाथा उपयोगी है---

---

१ अ. क. प्रत्योः 'चउत्थए पत्थडे' इति पाठः ।

मुह-भूमीण विसेसो उच्छय[1]भजिदो दु जो हुवे वड्ढी ।
वड्ढी इच्छागुणिदा मुहसहिया होइ वड्डिफलं ॥ १ ॥

पुणो एवमाणिदवड्ढि दससु ठाणेसु ठविय एगादिएगुत्तरसलागाहि गुणिय मुह-पक्खेवे कदे इच्छिदपत्थडाणमाउअं होदि[2] । तस्स पमाणमेदं | १/१० | १/५ | ३/१० | २/५ | १/२ | ३/५ | ७/१० | ४/५ | ९/१० | १ | । एसो अत्थो सुत्ते अवुत्तो कधं णव्वदे ? किमिदि ण वुत्तो, वुत्तो चेव देसामासियभावेण । एदं सुत्तं देसामासियमिदि कुदो णव्वदे ? गुरुवदेसादो ।

बिदियाए जाव सत्तमाए पढवीए णेरइया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ७ ॥

मुख और भूमिका जो विशेष अर्थात् अन्तर हो उसे उत्सेधसे भाजित करदेनेपर जो वृद्धिका प्रमाण आता है, उस वृद्धिको अभीष्टसे गुणा करके मुखमें जोडनेपर वृद्धिका फल प्राप्त होता है ॥ १ ॥

पुनः इस प्रकार लाये हुए वृद्धिके प्रमाणको दश स्थानोंमें स्थापित कर एक आदि एक-एक अधिकके क्रमसे बढी हुई शलाकाओंसे गुणितकर लब्धको मुखमें मिला देनेसे प्रत्येक अभीष्ट पाथडेका आयुप्रमाण निकल आता है। इस प्रकार निकला हुआ चतुर्थ आदि पाथडोंका आयुप्रमाण इस प्रकार है——

क्रम सं.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
पाथडा	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
आयुप्र.	१/१०	२/१०	३/१०	२/५	१/२	३/५	७/१०	४/५	९/१०	१

शंका—यह अर्थ सूत्रमें तो कहा नहीं गया, फिर वह कहांसे जाना जाता है ?
समाधान—क्यों नहीं कहा गया ? देशामर्शक भावसे कहा ही गया है।

शंका—प्रस्तुत सूत्र देशामर्शक है यह कैसे जाना जाता है ?
समाधान—गुरुजीके उपदेशसे जाना जाता है कि प्रस्तुत सूत्र देशामर्शक है।

दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तककी पृथिवीयोंमें नारकी जीव वहां कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ७ ॥

---

१ क. प्रतौ विसेसो च्छिव इति पाठः । २ म. प्रतौ कदे इच्छिव इच्छिद इति पाठः ।

सुगममेदं ।

जहण्णेण एक्क तिण्णि सत्त दस सत्तारस बावीस सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ८ ॥

बिदियाए पुढवीए समयाहियमेक्कं सागरोवमं । तदियाए पुढवीए तिण्णि[2] सागरोवमाणि समयाहियाणि । चउत्थीए पुढवीए सत्त सागरोवमाणि समयाहियाणि । पंचमीए पुढवीए दस सागरोवमाणि समयाहियाणि । छट्ठीए पुढवीए सत्तारस सागरोवमाणि समयाहियाणि । सत्तमीए पुढवीए बावीस सागरोवमाणि समयाहियाणि । सादिरेयमिदि वुत्ते एक्को चेव समओ अहिओ त्ति कधं णव्वदे ? 'उवरिल्लुक्कस्सट्ठिदी समयाहिया हेट्ठिमपुढवीणं जहण्णा' त्ति[1] वयणादो णव्वदे ।

उक्कस्सेण तिण्णि सत्त दस सत्तारस बावीस तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥ ९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्यसे दूसरी पृथिवीमें कुछ अधिक एक सागरोपम, तिसरीमें कुछ अधिक तीन, चौथीमें कुछ अधिक सात, पांचवीमें कुछ अधिक दश, छठवीमें कुछ अधिक सत्तरह और सातवींमें कुछ अधिक बाईस सागरोपम काल तक नारकी जीव रहते हैं ॥ ८ ॥

दूसरी पृथिवीमें एक समय अधिक एक सागरोपम, तीसरी पृथिवीमें एक समय अधिक तीन सागरोपम, चौथी पृथिवीमें एक समय अधिक सात सागरोपम पांचवीं पृथिवीमें एक समय अधिक दश सागरोपम, छठी पृथिवीमें एक समय अधिक सत्तरह सागरोपम और सातवीं पृथिवीमें एक समय अधिक बाईस सागरोपम आयुप्रमाण काल तक है ।

शंका—सूत्रमें 'सातिरेक' अर्थात् 'कुछ अधिक' शब्द आया है उससे एक मात्र समय ही अधिक होता है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि 'उत्तरोत्तर उपरिम पृथवीकी उत्कृष्ट स्थिति एक समय अधिक होकर नीचे नीचेकी पृथिवियोंकी जघन्य स्थिति होती है' इस आगमवचनसे ही जाना जाता है कि उपर्युक्त पृथियोंकी जघन्यायुमें सातिरेकका प्रमाण केवल एक समय अधिक है ।

द्वितीयादि पृथिवियोंमें नारकी जीव उत्कृष्टसे क्रमशः तीन, सात, दश, सत्तरह, बाईस और तेतीस सागरोपम काल तक रहते हैं ॥ ९ ॥

---

१ नारकाणां च द्वितीयादिषु । त. सू. ४. ३५. उवरिमउक्कस्साऊ समयजुदो हेट्ठिमे जहण्णं खु ॥ ति. प. २, २१४.

२ अ. क. प्रत्योः तदियाए तिण्णि इति पाठः ।

एत्थ जहासंखणाओ अल्लिएदव्वो। एदाणि दो वि सुत्ताणि देसमासियाणि, पादेक्कं पुढवीणं जहण्णुक्कस्सट्ठिदीपरूवणामुहेण सव्वपत्थडाणमाउट्ठिदिसूचणादो। एदेहि दोहि वि सुत्तेहि सूचिदत्थस्स परूवणं कस्सामो। तं जहा–तणओ[1] थणओ वणओ मणओ घादो संघादो जिब्भो जिब्भओ लोलो लोलुवो थणलोलुवो चेदि एदे बिदियपुढवीए इंदिया[2]। एदेसिमाउट्ठिदीए आणिज्जमाणाए पढमपुढविउक्कस्साउअं मुहं काऊण बिदियाए पुढवीए उक्कस्साउअं तिण्णिसागरोवमपमाणं भूमिं काऊण एक्कारस इंदए उस्सेहं काऊण पुव्विल्लकरणगाहाए बिदियपुढवीएक्कारसपत्थडाणं पादेक्कमाउपमाणमाणेदव्वं[3]। तेसिं पमाणमेदं

१ $\frac{२}{११}$	१ $\frac{४}{११}$	१ $\frac{६}{११}$	१ $\frac{८}{११}$	१ $\frac{१०}{११}$	२ $\frac{१}{११}$	२ $\frac{३}{११}$	२ $\frac{५}{११}$	२ $\frac{७}{११}$	२ $\frac{९}{११}$	३

। तदियाए पुढवीए तत्तो तसिदो तवणो तावणो णिदाहो पज्जलिदो उज्जलिदो सुपज्जलिदो संपज्ज

यहां पर सूत्रके अर्थ करनेमें 'यथासंख्य' न्यायका आश्रय लेना चाहिये अर्थात् तीन, सात आदि सागरोपमोंको क्रमशः दूसरी, तीसरी आदि पृथिवियोंके आयुप्रमाणरूपसे योजित करना चाहिये। पूर्वोक्त दोनों सूत्र देशामर्शक हैं, क्योंकि, वे प्रत्येक पृथिवीकी जघन्य और उत्कृष्ट स्थितिकी प्ररूपणा द्वारा अपने अपने समस्त पाथडोंकी आयुस्थितिकी सूचना करते हैं। अब हम यहां इन दोनों सूत्रोंके द्वारा सूचित अर्थका प्ररूपण करते हैं। वे इस प्रकार हैं—

तनक, स्तनक, वनक, मनक, घात, संघात, जिह्व, जिह्वक, लोल, लोलुप और स्तनलोलुप ये क्रमशः द्वितीय पृथिवीके ग्यारह इन्द्रकोंके नाम हैं। इनकी आयुस्थिति लानेके लिये प्रथम पृथिवीकी उत्कृष्ट स्थितिको मुख करके तथा दूसरी पृथिवीकी तीन सागरोपम प्रमाण उत्कृष्ट आयको भूमि करके और ग्यारह इन्द्रकोंको उत्सेध करके पूर्वोक्त करणगाथानुसार द्वितीय पृथिवीके ग्यारह पाथडोंमेंसे प्रत्येकका आयुप्रमाण मुखमें ले आना चाहिये।

उदाहरण—द्वि. पृ. संबंधी मुख = १ सा., भूमि = ३ सा., उत्सेध = ११. अतएव प्रत्येक प्रस्तरके लिये वृद्धिका प्रमाण हुआ—(३ − १) ÷ ११ = $\frac{२}{११}$। इसको इच्छा अर्थात् प्रस्तरकी क्रमसंख्यासे गुणा करनेपर व मिलानेपर ग्यारहों प्रस्तरोंका आयुप्रमाण इस प्रकार आता है—

प्रस्तर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
आ. प्र. मा.	१ $\frac{२}{११}$	१ $\frac{४}{११}$	१ $\frac{६}{११}$	१ $\frac{८}{११}$	१ $\frac{१०}{११}$	२ $\frac{१}{११}$	२ $\frac{३}{११}$	२ $\frac{५}{११}$	२ $\frac{७}{११}$	२ $\frac{९}{११}$	३

तीसरी पृथिवीमें तप्त, त्रसित, तपन, तापन, निदाघ, प्रज्वलित, उज्ज्वलित,

---

१ अ. क. प्रत्योः 'वणुओ' इति पाठः। २ अ. क. प्रत्योः इंदिया इति पाठः।

३ अ. क. प्रत्योः पक्खवणमाणेदव्वं इति पाठः।

लिदो त्ति एदे णव इंदया । एदेसिमाउअं पुव्वं व आणिदूण आणेदव्वं। तेसिं संदिट्ठी एसा

३ ४/९	३ ८/९	४ ३/९	४ ७/९	५ २/९	५ ६/९	६ १/९	६ ५/९	७

। चउत्थीए पुढवीए आरो तारो मारो वंतो तमो खादो खदखदो चेदि सत्त इंदया । एदेसिमाउअपमाणं पुव्वं व आणेदव्वं । तस्स संदिट्ठी एसा

७ ३/७	७ ६/७	८ २/७	८ ५/७	९ १/७	९ ४/७	१०

। पंचमीए पुढवीए तमो भमो झसो अंधो तिमिसो चेदि पंच इंदया। एदेसिमाउअपमाणस्स संदिट्ठी एसा

११ २/५	१२ ४/५	१४ १/५	१५ ३/५	१७

। छट्ठीए पुढवीए हिमो वद्दलो लल्लंको[1] चेदि तिण्णि इंदया । तेसिमाउअपमाणस्स संदिट्ठी एसा

१८ २/३	२० १/३	२२

। सत्तमाए पुढवीए अवहिट्ठाणम्मिवि एक्को चेव इंदओ । तत्थ जहण्ण-

---

सुप्रज्वलित और संप्रज्वलित नामक नव इन्द्रक हैं। इनकी आयु भी पूर्वोक्त विधिसे जानकर ले आना चाहिये । उनकी संदृष्टि इस प्रकार है---

प्रस्तर	१	२	३	४	५	६	७	८	९
आ. प्र. सा.	३ ४/९	३ ८/९	४ ३/९	४ ७/९	५ २/९	५ ६/९	६ १/९	६ ५/९	७

चौथी पृथिवीमें आर, तार, मार, वान्त, तम, और खात खातखात नामक सात इन्द्रक हैं। इनका आयुप्रमाण भी पहलेके समान ले आना चाहिये। उसकी संदृष्टि इस प्रकार है --

प्रस्तर	१	२	३	४	५	६	७
आ. प्र. सा.	७ ३/७	७ ६/७	८ २/७	८ ५/७	९ १/७	९ ४/७	१०

पांचवीं पृथिवीमें तम, भ्रम, झष, अन्ध और तिमिस्र नामक पांच इन्द्रक हैं। उनके आयुप्रमाणकी संदृष्टि इस प्रकार है।

प्रस्तर	१	२	३	४	५
आ. प्र. सा.	११ २/५	१२ ४/५	१४ १/५	१५ ३/५	१७

छठी पृथिवीमें हिम, वर्दल और लल्लंक नामक तीन इन्द्रक हैं। उनके आयुप्रमाणकी संदृष्टि यह है--

प्रस्तर	१	२	३
आ. प्र. सा.	१८ २/३	२० १/३	२२

सातवीं पृथिवीमें अवधिस्थान नामक एक ही इन्द्रक है। वहां जघन्य आयु

---

१ अ. क. प्रत्योः 'अल्लंको' इति पाठः।

क्कस्साउअं च समयाहियं बावीसं तेत्तीसं सागरोवमाणि २२ । ३३[1] ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खो केवचिरं कालादो होदि? ॥ १० ॥

सुगममेदं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं[2] ॥ ११ ॥

मणुस्सेहिंतो आगंतूण तिरिक्खअपज्जत्तेसुप्पज्जिय तत्थ जहण्णाउट्ठिदिमच्छिय णिप्फिडिदूण गदस्स खुद्दाभवग्गहणमेत्तजहण्णकालुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ १२ ॥

अणप्पिदगदीहिंतो आगंतूण तिरिक्खेसुप्पज्जिय आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टे तिरिक्खेसु परियट्टिदूण अण्णगदिं गदस्स सुत्तुत्तकालुवलंभादो । असंखेज्जपोग्गलपरियट्टेत्ति वुत्ते आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव होंति ।

एक समय अधिक बाईस सागरोपम तथा उत्कृष्ट आयु तेतीस सागरोपम है । २२ । ३३ ।

तिर्यंचगतिमें जीव कितने काल तक रहता है ? ॥ १० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

तिर्यंचगतिमें तिर्यंच जीव वहां जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण काल तक रहता है ॥ ११ ॥

क्योंकि, मनुष्यगतिसे आकर तिर्यंच अपर्याप्तकोंमें उत्पन्न होकर वहां जघन्य आयुस्थितिप्रमाण काल तक रहकर वहांसे निकलनेवाले जीवके क्षुद्रभवग्रहणप्रमाण जघन्य काल पाया जाता है ।

तिर्यंच जीव उत्कृष्टसे अनन्त काल तक रहता है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है ।

क्योंकि, अविवक्षित गतियोंसे आकर तिर्यंचोंमें उत्पन्न होकर आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण पुद्गलपरिवर्तन काल तक तिर्यंचोंमें परिभ्रमण करके अन्यगतिमें जानेवाले जीवके सूत्रोक्त असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल पाया जाता है । असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन कहनेपर आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाणहीसे वे पुद्गल परिवर्तन होते हैं ।

---

१ म. प्रतौ २३ इति पाठः ।

२ छत्तीसं तिण्णि सया छावट्ठिसहस्सवारमरणाणि । अंतोमुहुत्तमज्झे पत्तो सि णिगोयवासम्मि ॥ वियलिंदिए असीदी सट्ठी चालीसमेव जाणेह । पंचिंदिय चउवीसं खुद्दभवंतोमुहुत्तस्स ॥ भावप्राभृत २८-२९.

वड्ढिमा'? ण होंति त्ति कधं णव्वदे ? ण, आइरियपरंपरागदुवदेसादो।

पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १३ ॥

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं अंतोमुहुत्तं ॥ १४ ॥

पंचिंदियतिरिक्खाणं खुद्दाभवग्गहणं, तत्थ अपज्जत्ताणं संभवादो। सेसेसु अंतोमुहुत्तं, तत्थ अपज्जत्ताणमभावादो। ण च पज्जत्तेसु जहण्णाउट्ठिदिपमाणं खुद्दाभवग्गहणं होदि, अंतोमुहुत्तुवदेसस्स एदस्स अणत्थयत्तप्पसंगादो।

उक्कस्सेण तिण्ण पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि ॥ १५ ॥

शंका—असंख्यात पुद्‌गलपरिवर्तनोंका तात्पर्य आवलीके असंख्यातवें भागमात्र वारसे ही है, अधिक नहीं, यह कैसे जाना जाता है ?

आचार्यपरम्परागत उपदेशसे।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त व पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी जीव वहां कितने काल तक रहते हैं ? ॥ १३ ॥

जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहणकालतक व पंचेन्द्रिय तिर्यंच पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त, व पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी अन्तर्मुहूर्तकालतक रहते हैं ॥ १४ ॥

क्योंकि, पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंका जघन्य काल क्षुद्रभवग्रहणप्रमाण है, कारण कि पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंमें अपर्याप्त जीवोंका होना संभव है। शेष तिर्यंचोंकाप्रमाण काल अन्तर्मुहूर्त है, क्योंकि, उनमें अपर्याप्त नहीं होते। पर्याप्तक जीवोंमें जघन्यायुस्थितिका प्रमाण क्षुद्रभवग्रहणकाल नहीं होता, अर्थात् उससे अधिक होता है, क्योंकि, यदि पर्याप्तकालके जघन्य आयुप्रमाण भी क्षुद्रभवग्रहणकाल मात्र होता तो प्रस्तुत सूत्रमें अन्तर्मुहूर्त कालके उपदेशके निरर्थक होनेका प्रसंग आजाता।

उत्कृष्टकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपमप्रमाण काल तक पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय पर्याप्त व पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी जीव रहते हैं ॥ १५ ॥

---

१ मु. प्रती वड्ढिदा इति पाठः।

अण्णिविएहिंतो[1] आगंतूण पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु उप्पज्जिय जहाकमेण पंचाणउवि सत्तेत्तालीस-पण्णारसपुव्वकोडीओ परिभमिय दाणेण दाणाणुमोदणेण वा तिपलिदोवमाउट्ठिदिएसु तिरिक्खेसु उप्पज्जिय सगआउट्ठिदिमच्छिय देवेसु उप्पण्णस्स एत्तियमेत्तकालस्सुवलंभादो। कधं तिरिक्खेसु दाणस्स संभवो? ण, तिरिक्खसंजदासंजदाण सचित्तभंजणे गहिदपच्चक्खाणाणं[2]। सल्लइपल्लवादि देंततिरिक्खाणं तदविरोधादो। इत्थि-पुरिस-णवुंसयवेदेसु अट्ठट्ठपुव्वकोडीओ अच्छदि त्ति कधं णव्वदे? आइरियपरंपरागयउवदेसादो।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति? ॥ १६ ॥

सुगममेदं।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १७ ॥

क्योंकि, पंचेन्द्रियोंको छोड एकेन्द्रिय आदि अन्य जातीय जीवोंमेंसे आकर पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त व पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी जीवोंमें उत्पन्न होकर क्रमशः पंचानवे, सैंतालीस व पन्द्रह पूर्वकोटिप्रमाण काल तक परिभ्रमण करके दान देनेसे अथवा दानका अनुमोदन करनेसे तीन पल्योपमकी आयुस्थितिवाले भोगभूमिक तिर्यंचोंमें उत्पन्न होकर अपनी आयुस्थिति प्रमाण काल तक वहां रहकर देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवके सूत्रोक्त काल घटित होता हुआ पाया जाता है।

शंका—तिर्यंचोंमें दान देना कैसे संभव है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जो तिर्यंच संयतासंयत जीव सचित्तभंजनके प्रत्याख्यान अर्थात् त्याग व्रतको ग्रहणकर लेते हैं उनके लिये शल्लकीके पत्तों आदिका दान करनेवाले तिर्यंचोंके दान देनेमें कोई विरोध नहीं आता।

शंका—स्त्री, पुरुष व नपुंसकवेदी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंमें आठ आठ पूर्वकोटिप्रमाण काल तक ही जीव रहता है यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—आचार्यपरम्परागत उपदेशसे

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव वहां कितने काल तक रहते हैं? ॥ १६ ॥

यह सूत्र सुगम है।

जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण काल तक जीव पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त रहते हैं ॥ १७ ॥

---

१ अ. स. प्रत्योः अण्णिविएहिंतो इति पाठः।   २ मु. प्रतौ पच्चक्खाणं इति पाठः।

अणप्पिदेहिंतो आगंतूण पंचिंदिय (तिरिक्ख)अपज्जत्तएसु[1] उप्पज्जिय सव्व-जहण्णकालेण भुंजमाणाउअं कदलीघादेण घादिय खुद्दाभवग्गहणमच्छिय णिप्पिडिदस्स तदुवलंभादो[2]। पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तएसु कदलीघादेण घादिदभुंजमाणाउएसु खुद्दाभवग्गहणकालो किमिदि णोवलब्भदे ? ण, तत्थ अइसुट्ठुघादं पत्तस्स वि भुंजमाणाउअस्स अंतोमुहुत्तस्स हेट्ठदो पदणाभावा। देव-णेरइएसु खुद्दाभवग्गहणमेत्ता अंतोमुहुत्तमेत्ता वा आउट्ठिदी किण्ण लब्भदे ? ण, तत्थ दसण्हं वस्ससहस्साणं हेट्ठदो आउअस्स बंधाभावा, तत्थतणभुंजमाणाउअस्स कदलीघादाभावादो च।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १८ ॥

कुदो ? अणप्पिदेहिंतो आगंतूण पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएसु उप्पज्जिय सव्वुक्कस्सियं भवट्ठिदिमच्छिय णिप्पिडिदस्स वि अंतोमुहुत्तादो[3] अहियकालस्साणुवलंभा।

क्योंकि, किन्हीं भी अविवक्षित पर्यायोंसे आकर पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तकोंमें उत्पन्न होकर व सर्वजघन्य कालसे भुज्यमान आयुको कदलीघातसे नष्ट करके क्षुद्रभवग्रहणकाल प्रमाणकालतक रहकर निकल जानेवाले जीवके सूत्रोक्त काल पाया जाता है।

शंका—कदलीघातसे भुज्यमान आयुको नष्ट करनेवाले पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तकोंमें क्षुद्रभवग्रहणप्रमाण काल क्यों नहीं पाया जाता ?

समाधान—नहीं क्योंकि पर्याप्तकोंमें बहुत अच्छी तरह आयुका घात करनेवाले जीवके भी अन्तर्मुहूर्तप्रमाण भुज्यमान आयुका इससेकममें पतन नहीं होता।

शंका—देव और नारकी जीवोंमें क्षुद्रभवग्रहणप्रमाण अथवा अन्तर्मुहूर्तप्रमाण आयुस्थिति क्यों नहीं पायी जाती ?

समाधान—नहीं, क्योंकि देव और नारकियों सम्बन्धी आयुका बंध दश हजार वर्षसे कम नहीं होता, और उनकी भुज्यमान आयुका कदलीघात भी नहीं होता।

उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त रहते हैं ॥ १८ ॥

क्योंकि, किन्हीं भी अविवक्षित पर्यायोंसे आकर पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तकोंमें उत्पन्न होकर और वहां सर्वोत्कृष्ट भवस्थितिप्रमाण काल तक रहकर निकलनेवाले जीवके भी अन्तर्मुहूर्तसे अधिक काल नहीं पाया जाता।

---

१ अ. ब. स. प्रतिषु पंचिंदिय अपज्जत्तएसु इति पाठः।
२ मु. प्रतौ एतदुवलंभादो इति पाठः।
३ अ. स. प्रत्योः अंतोमुहुत्तादो इति पाठः।

(मणुसगदीए) मणुसा मणुसपज्जत्ता मणुसिणी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १९ ॥

एगजीवस्स कालाणुगमे कीरमाणे 'मणुसो केवचिरं कालादो होदि' त्ति एगजीव-विसयपुच्छाए होदव्वमिदि ? ण, एक्कम्हि वि जीवे एयाणेयसंखोवलक्खिए असुद्धदव्व-ट्ठियविवक्खाए अणेयत्तस्स अविरोहा। सव्वत्थ पुच्छापुव्वो चेव अत्थणिद्देसो किमट्ठं कीरदे ? ण, वयणपवुत्तीए परट्ठत्तपवुप्पायणफलत्तादो।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणमंतोमुहुत्तं ॥ २० ॥

सामण्णमणुस्साणं जहण्णाउट्ठिदिपमाणं खुद्दाभवग्गहणं होदि, तत्थ अपज्जत्ताणं संभवादो। पज्जत्त-मणुसिणीसु जहण्णाउट्ठिदिपमाणमंतोमुहुत्तं, तत्थ तत्तो हेट्ठिम-आउट्ठिदिवियप्पाणमणुवलंभादो। सेसं सुगमं।

उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि ॥ २१ ॥

(मनुष्यगतिमें) मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त व मनुष्यिनी जीव वहां कितने काल तक रहते हैं ॥ १९ ॥

शंका—जब एक जीवकी अपेक्षा कालानुगम किया जा रहा है 'तब मनुष्य कितने काल तक रहता है' इस प्रकार एक जीव विषयक ही प्रश्न होना चाहिये, (न कि बहुवचनात्मक जैसा कि सूत्रमें पाया जाता है) ?

समाधान—नहीं, क्योंकि एक व अनेक संख्यासे उपलक्षित जीवमें अशुद्ध द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा अनेकपना होनेमें कोई विरोध नहीं उत्पन्न होता।

शंका—सर्वत्र पृच्छापूर्वक ही अर्थका निर्देश क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि वचनप्रवृत्तिका फल परके लिये प्रतिपादन करना है।

जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण काल तक जीव मनुष्य, और अन्तर्मुहूर्त काल तक मनुष्य पर्याप्त व मनुष्यिनी रहते हैं ॥ २० ॥

सामान्य मनुष्योंकी जघन्य आयुस्थितिका प्रमाण क्षुद्रभवग्रहणप्रमाण होता है, क्योंकि, सामान्य मनुष्योंमें अपर्याप्त जीवोंका होना संभव है। किन्तु पर्याप्तक मनुष्य और मनुष्यिनियोंमें जघन्य आयुस्थितिका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है, क्योंकि, उनमें (अपर्याप्तकोंके अभावसे) आयुस्थितिके विकल्प अन्तर्मुहूर्तसे कमके नहीं पाये जाते। शेष सूत्रार्थ सुगम है।

उत्कृष्टसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम काल तक जीव मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त व मनुष्यिनी रहते ॥ २१ ॥

कुदो ? अणप्पिदेहिंतो आगंतूण अप्पिदमणुसेसुववज्जिय सत्तेतालीस तेवीस सत्तपुव्वकोडीओ जहाकमेण परिभमिय दाणेण दाणाणुमोदेण वा तिपलिदोवमाउट्ठिदिमणुस्सेसुप्पण्णस्स तदुवलंभादो ।

मणुस्सअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ २२ ॥

कधमेत्थ बहुवयणणिद्देसो जुज्जदे? ण, पुव्वुत्तकमेण एक्कम्हि बहुत्तणिद्देसस्स अविरोधादो । अधवा ण एत्थ एक्केण चेव जीवेण अहियारो, किंतु पादेक्कं सव्वजीवेहि अहियारो त्ति काऊण बहुवयणणिद्देसो उवज्जदे ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ २३ ॥

कुदो ? अणप्पिदेहिंतो आगंतूण तत्थुप्पज्जिय घादखुद्दाभवग्गहणमच्छिय णिप्फिडिदूण अणप्पिएसु उप्पण्णस्स तदुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २४ ॥

क्योंकि किन्हीं भी अविवक्षित पर्यायोंसे आकर विवक्षित मनुष्योंमें उत्पन्न होकर क्रमशः सैंतालीस, तेईस व सात पूर्वकोटि काल परिभ्रमण करके दान देकर अथवा दानका अनुमोदन करके तीन पल्योपम आयुस्थितिवाले (भोगभूमिज) मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवके सूत्रोक्त काल पाया जाता है ।

अपर्याप्तक मनुष्य वहां कितने काल तक रहते हैं ? ॥ २२ ॥

शंका—सूत्रमें बहुवचनात्मक निर्देश कैसे उपयुक्त ठहरता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, पहले कहे हुए तथ्यके अनुसार एकमें बहुवचनके निर्देशमें कोई विरोध उत्पन्न नहीं होता । अथवा, यहां केवल एक ही जीवकी अपेक्षाका अधिकार नहीं, है, किन्तु प्रत्येक रूपसे सभी जीवोंकी अपेक्षा कधिकार नहीं है. किन्तु प्रत्येक रूपसे सभी जीवोंकी अपेक्षा अधिकार है, ऐसा समझकर बहुवचननिर्देश उपयुक्त सिद्ध हो हो जाता है ।

जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहणप्रमाण काल तक जीव अपर्याप्त मनुष्य रहते हैं ॥ २३ ॥

क्योंकि, किन्हीं भी अन्य पर्यायोंसे आकर अपर्याप्तक मनुष्योंमें उत्पन्न होकर कदलीघातसे भुज्यमान आयुके घात द्वारा क्षुद्रभवग्रहणप्रमाण काल तक रहकर व वहांसे निकलकर किसी भी अन्य पर्यायमें उत्पन्न होनेवाले जीवके सूत्रोक्त कालकी प्राप्ति होती है ।

उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त काल तक अपर्याप्त मनुष्य रहते हैं ॥ २४ ॥

---

१ अ. प्रतौ मणुसअपज्जत्ता इति पाठः ।

कुदो ? अइबहुवारमेदेसु अइदीहाउओ होदूण उप्पण्णस्स वि दोघडियामेत्तभवट्ठिदीए अभावादो ।

देवगदीए देवा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ २५ ॥

सुगममेदं[1] ।

जहण्णेण दसवाससहस्साणि ॥ २६ ॥

तिरिक्ख मणुस्सेहिंतो जहण्णाउट्ठिदिदेवेसुप्पज्जिय णिग्गयस्स एत्तियमेत्तकालुवलंभादो ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥ २७ ॥

सव्वट्ठसिद्धिदेवेसु आउअं बंधिय कमेण तत्थुप्पज्जिय तेत्तीससागरोवमाणि तत्थच्छिदूण णिग्गयस्स तदुवलंभादो । सत्तट्ठभवग्गहणाणि दीहाउट्ठिदिएसु देवेसु उप्पाइदे कालो बहुओ लब्भदि त्ति वुत्ते, ण देव-णेरइयाणं भोगभूमितिरिक्ख-मणुस्साणं

क्योंकि, अनेक बहुवार अपर्याप्त मनुष्योंमें अतिदीर्घायु होकर भी उत्पन्न हुए जीवके दो घडी प्रमाण काल तक भवस्थितिका होना असंभव है ।

देवगतिमें देव वहां कितने काल तक रहते हैं ॥ २५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्यसे दश हजार वर्ष तक जीव देव रहते हैं ॥ २६ ॥

क्योंकि, तिर्यंचों या मनुष्योंमेसे आकर जघन्य आयुवाले देवोंमें उत्पन्न होकर वहांसे निकले हुए जीवके सूत्रोक्त काल ही देवपर्यायमें पाया जाता है ।

उत्कृष्टसे तेतीस सागरोपम काल तक जीव देव रहते हैं ॥ २७ ॥

क्योंकि, सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देवोंमें आयुको बांधकर क्रमशः वहां उत्पन्न हो व तेतीस सागरोपम काल तक वहां रहकर निकले हुए जीवके सूत्रोक्त काल पाया जाता है।

शंका—दीर्घायुस्थितिवाले देवोंमें सात आठ भवोंतक उत्पन्न कराने पर और भी अधिक काल देवगतिमें पाया जा सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, देव, नारकी, भोगभूमिज तिर्यंच

---

१ प्रतिषु 'सुगममेवं' इति पाठः ।

च मुदाणं पुणो तत्थेवाणंतरमुप्पत्तीए अभावादो । कुदो ? अच्चंताभावादो ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ २८ ॥

सुगममेदं ।

जहण्णेण दसवाससहस्साणि, दसवाससहस्साणि, पलिदोवमस्स अट्ठमभागो ॥ २९ ॥

भवणवासिय-वाणवेंतराणं दसवाससहस्साणि जहण्णाउट्ठिदी, जोदिसियाणं पलिदोवमस्स अट्ठमो भागो । विवच्चासो किण्ण होदि ? ण, समसु उद्देसाणुद्देसेसु जहासंखं मोत्तूण अण्णस्सासंभवादो । सेसं सुगमं ।

उक्कस्सेण सागरोवमं सादिरेयं, पलिदोवमं सादिरेयं, पलिदोवमं सादिरेयं[1] ॥ ३० ॥

और भोगभूमिज मनुष्य, इनके मरनेपर पुन: उसी पर्यायमें अनन्तर उत्पत्ति नहीं पायी जाती, कारण कि उनके वहां पुन: उत्पन्न होनेका अत्यंत अभाव है ।

भवनवासी, वानव्यन्तर व ज्योतिषी देव वहां कितने काल तक रहते हैं ? ॥ २८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्यसे दश हजार वर्ष तक, दश हजार वर्ष तक तथा पल्योपमके अष्टम भाग काल तक जीव क्रमशः भवनवासी, वानव्यन्तर व ज्योतिषी देव रहते हैं ॥ २९ ॥

भवनवासी और वानव्यन्तर देवोंकी जघन्य आयुस्थिति दश हजार वर्ष है तथा ज्योतिषी देवोंमें जघन्य आयुस्थिति पल्योपमके अष्टम भागप्रमाण है ।

शंका—जघन्य आयुस्थिति इसके विपर्यासरूपसे अर्थात् भवनवासी और वानव्यन्तर देवोंमें पल्योपमके अष्टम भाग और ज्योतिषी देवोंमें दश हजार वर्षकी क्यों नहीं हो सकती ?

समाधान—नहीं, क्योंकि उद्दिष्ट और अनुद्दिष्ट पदोंके समान होनेपर यथासंख्य न्यायको छोडकर अन्य प्रकारका होना असंभव है ।

शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

उत्कृष्टसे क्रमशः सातिरेक एक सागरोपम, सातिरेक एक पल्योपम व सातिरेक एक पल्योपम काल तक जीव भवनवासी, वानव्यन्तर व ज्योतिषी देव रहते हैं ॥ ३० ॥

---

१ अ. ब. स. प्रतिषु द्वितीयवारं पलिदोवमं सादिरेयं इति पाठोनास्ति ।

भवणवासिएसु सागरोवममद्धसागरोवमहियं[1]। वाणवेंतर-जोदिसिएसु पलिदोवमं अद्धपलिदोवमहियं[1] उक्कस्सट्ठिदिपमाणं होदि। ण च बंधसुत्तेण सह विरोहो, उवरिम-आउवमोवट्टणघादेणाघादिय उप्पण्णेसु एदेसिमाउवाणमुवलंभादो। एत्थ सव्वत्थ किंचूण-पमाणं जाणिदूण वत्तव्वं। एदेसु तिसु वि देवलोएसु जहण्णाउअप्पहुडि आयुक्कस्साउव त्ति समउत्तरवड्ढीए आउवं वड्ढदि, पत्थडाणमभावा। सेसं सुगमं।

सोहम्मीसाणप्पहुडि जाव सदर-सहस्सारकप्पवासियदेवा केवचिरं कालादो होंति ॥ ३१ ॥

सुगममेदं।

जहण्णेण पलिदोवमं वे सत्त दस चोद्दस सोलस सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ३२ ॥

सोधम्मीसाणेसु दिवड्ढपलिदोवमं जहण्णाउअं, सणक्कुमार-माहिंदेसु अड्डाइज्ज-

---

भवनवासी देवोंमें उत्कृष्ट आयुस्थितिका प्रमाण अर्ध सागरोपम अधिक एक सागरोपम होता है, तथा वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें अर्ध पल्योपम अधिक एक पल्योपम होता है। इस प्रकार उत्कृष्ट आयुके प्रमाणके कथनका आयुबन्धसम्बन्धी सूत्रमें कहे गये प्रमाणसे विरोध नहीं उत्पन्न होता, क्योंकि, ऊपरकी आयुको अपवर्तना-घातसे घात करके उत्पन्न हुए भवनवासी आदि देवोंमें आयुओंका प्रमाण इसी प्रकार पाया जाता है। इन सब आयुओंमें जो किंचित् हीन प्रमाण होता है उसका कथन जानकर करना चाहिये। (देखो जीवट्ठाण, कालानुगम, सूत्र ९६ टीका, भाग ४ पृ. ३८२)

इन तीनों देवलोकोंमें जघन्यायुसे लेकर उत्कृष्ट आयु पर्यन्त उत्तरोत्तर एक एक समय अधिक क्रमसे आयु बढती है, क्योंकि यहां प्रस्तरोंका अभाव है। शेष सूत्रार्थ सुगम है।

जीव सौधर्म-ईशानसे लगाकर शतार-सहस्रार पर्यन्त कल्पवासी देव वहां कितने काल तक रहते हैं? ॥ ३१ ॥

यह सूत्र सुगम है।

जघन्यसे सातिरेक एक पल्योपम, दो सागरोपम, सात सागरोपम, दश सागरोपम, चौदह सागरोपम व सोलह सागरोपम काल तक जीव सौधर्म-ईशानसे लेकर शतार-सहस्रार तकके कल्पवासी देव रहते हैं ॥ ३२ ॥

सौधर्म और ईशान स्वर्गोंमें डेढ पल्योपम जघन्य आयु है। सनत्कुमार और

---

१ अ. आ. प्रत्योः पमाहियं इति पाठः।

सागरोवमाणि, बम्ह बम्हु'त्तरेसु साद्धसत्तसागरोवमाणि, लांतव काविट्ठेसु साद्धदस-सागरोवमाणि। सुक्क-महासुक्केसु साद्धचोद्दससागरोवमाणि सदर-सहस्सारकप्पेसु साद्धसोलससागरोवमाणि जहण्णाउवं।

उक्कस्सेण वे सत्त दस चोद्दस सोलस अट्ठारस सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ३३ ॥

सोहम्मीसाणेसु' अड्ढाइज्जसागरोवमाणि देसूणाणि, सणक्कुमार-माहिंदेसु साद्धसत्त-सागरोवमाणि देसूणाणि, बम्ह-बम्होत्तरेसु' साद्धदससागरोवमाणि देसूणाणि, लांतव-काविट्ठेसु साद्धचोद्दससागरोवमाणि देसूणाणि, सुक्क-महासुक्केसु साद्धसोलससागरोवमाणि देसूणाणि, सदर सहस्सारेसु साद्धअट्ठारससागरोवमाणि देसूणाणि। एत्थ देसूणपमाणं जाणिदूण वत्तव्वं। एदाणि दो वि सुत्ताणि देसामासयाणि। तेणेदेहि सूइदत्थस्स परूवणं कस्सामो तं जहा— उडु विमलो चंदो वग्गु वीरो अरुणो णंदणो णलिणो कांचणो रुहिरो चंचो मरुदिद्धिसो' वेलुरिओ रुजगो रुचिरो अंको फलिहो तवणीओ मेहो अब्भं हरिदो पउमं

माहेन्द्र स्वर्गोंमें अढाई सागरोपम, ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर स्वर्गोंमें साढे सात सागरोपम, लांतव और कापिष्ठ स्वर्गोंमें साढे दश सागरोपम, शुक्र और महाशुक्रमें साढे चौदह सागरोपम, तथा शतार और सहस्रार स्वर्गोंमें साढे सोलह सागरोपम जघन्य आयु है।

उत्कृष्टसे सातिरेक दो, सात, दश, चौदह, सोलह व अठारह सागरोपम काल तक जीव सौधर्म-ईशान आदि कल्पोंमें रहते हैं ॥ ३३ ॥

सौधर्म-ईशान कल्पोंमें कुछ कम अढाई सागरोपम, सनत्कुमार-माहेन्द्रमें कुछ कम साढे सात सागरोपम, ब्रह्म-ब्रह्मोत्तरमें कुछ कम साढे दश सागरोपम, लांतव-कापिष्ठमें कुछ कम साढे चौदह सागरोपम, शुक्र-महाशुक्रमें कुछ कम साढे सोलह सागरोपम, तथा शतार-सहस्रार कल्पोंमें कुछ कम साढे अठारह सागरोपम उत्कृष्ट आयुप्रमाण होता है। यहां देशोन अर्थात् कुछ कमका प्रमाण जानकर कहना चाहिये।

पूर्वोक्त दोनों सूत्र देशामर्शक हैं, इसलिये इनके द्वारा सूचित अर्थका प्ररूपण करते हैं। वह इस प्रकार है—

ऋतु, विमल, चन्द्र, वल्गु, वीर, अरुण, नन्दन, नलिन, कांचन, रुधिर, चंच, मरुत् (माहनत्र), ऋद्धीश (ह्रीश), वैडूर्य, रुचक, रुचिर, अङ्क, स्फटिक, तपनीय, मेघ (मेव), अभ्र, हरित, पद्म, लोहिताङ्क, वरिष्ठ, नन्दावर्त, प्रभंकर, पिष्टाक गज, मित्र

१ अ. प्रतौ बम्होत्तरेसु इति पाठः। २ अ. आ. क. प्रतिषु सोधम्मीसाणे इति पाठः।
३ अ. प्रतौ बम्होत्तरेसु इति पाठः। ४ अ. प्रतौ मरुदिदिसो इति पाठः।

लोहिदंको वरिट्ठो[1] णंदावत्तो पहंकारो पिट्ठओ गजो मित्तो[2] पभा चेदि सोधम्मीसाणे एक्कत्तीस पत्थडा होंति[3]। एत्थ उदुम्हि पढमपत्थडे जहण्णमाउअं दिवड्ढपलिदोवमं उक्कस्समद्धसागरोवमं। एत्तो तीसण्हं इंदियाणं वड्ढी वुच्चदे। तत्थ अद्धसागरोवमं मुहं होदि, भूमी अड्ढाइज्जसागरोवमाणि। भूमीदो मुहमवणिय उच्छएण भागे हिदे सागरोवमस्स पण्णारसभागो वड्ढी होदि। एदमिच्छिदपत्थडसंखाए गुणिय मुहे पक्खित्ते विमलादीणं तीसण्हं पत्थडाणमाउआणि होंति। तेसिमेसा संदिट्ठी---

१७/३०	१९/३०	७/१०	२३/३०	५/६	९/१०	२९/३०	३१/३०	११/१०	७/६	३७/३०	१३/१०	४१/३०	४३/३०	३/२	४७/३०	४९/३०	१७/१०	५३/३०	११/६

१९/१०	५९/३०	६१/३०	२१/१०	१३/६	६७/३०	२३/१०	७१/३०	७३/३०	५/२

सोधम्मीसाणे एक्कत्तीसं पत्थडाणि त्ति कधं णव्वदे ?

इगितीस सत्त चत्तारि दोण्णि एक्केक्क छक्क एक्काए[4]।
उदुआदिविमाणिंदा तिरधियसट्ठी मुणेयव्वा[5] ॥ २ ॥

और प्रभा इन नामोंके इकतीस प्रस्तर सौधर्म-ईशान कल्पमें हैं। इनमेंसे ऋतु नामक प्रथम प्रस्तरमें जघन्य आयु डेढ पल्योपम व उत्कृष्ट आयु अर्ध सागरोपमप्रमाण है। अब यहां द्वितीयादि तीस इन्द्रकोंमें वृद्धिका प्रमाण कहते हैं---यहां अर्ध सागरोपम मुख है और अढाई सागरोपम भूमि है। अतएव भूमिमेंसे मुखको घटा कर उच्छ्रय अर्थात् उत्सेध (३०) से भाग देनेपर $(२\frac{१}{२} - \frac{१}{२}) \div ३० = \frac{२}{३०} = \frac{१}{१५}$ एक सागरोपमका पन्द्रहवां भाग वृद्धिका प्रमाण आता है। इस $\frac{१}{१५}$ को अभीष्ट प्रस्तरकी संख्यासे गुणित करके मुखमें मिला देनेपर विमलादिक तीस प्रस्तरोंकी आयुका प्रमाण होता है। उनकी संदृष्टि इस प्रकार है। (मूलमें देखिये)

शंका---सौधर्म-ईशान कल्पमें इकतीस विमान प्रस्तर हैं, यह कैसे जाना ?

समाधान---सौधर्म-ईशान कल्पोंमें इकतीस विमान प्रस्तर हैं, सानत्कुमार-माहेंद्र कल्पोंमें सात, ब्रह्म-ब्रह्मोत्तरमें चार, लांतव-कापिष्टमें दो, शुक्र-महाशुक्रमें एक, शतारसहस्रारमें एक, आनत-प्राणत और आरण-अच्युत कल्पोंमें छह तथा नौ ग्रैवेयकोंमें एक एक. अनुदिशोंमें एक और अनुत्तर विमानोंमें एक. इसप्रकार ऋतु आदिक इन्द्रक विमान तिरेसठ जानना चाहिये।

---

१ ब. प्रतौ वट्ठो इति पाठः। २ अ. स. प्रत्योः मेत्ता इति पाठः। ३ त. रा. वा. ४, १९, ८. ४ अ. ब. स. प्रतिषु एक्काए इति पाठः। ५ इगितीस सत्त चत्तारि दोण्णि एक्केक्क छक्क चदुकप्पे। तित्तिय एक्केक्किंदयणामा उडुआदि तेवट्ठी॥ त्रि. सा. ४६२.

इदि आरिसवयणादो।

अंजणो वणमालो णागो गरुडो लंगलो[1] बलहद्दो चक्कमिदि एदे सणक्कुमार-माहिंदेसु सत्त पत्थडा। एदेसिमाउअप्पमाणे आणिज्जमाणे मुहमड्ढाइज्जसागरोवमाणि, भूमी साद्धसत्तसागरोवमाणि, सत्त उस्सेहो होदि। तेसिं संदिट्ठी-- $\left| 3\frac{3}{14} \;\middle|\; 3\frac{13}{14} \;\middle|\; 4\frac{9}{14} \;\middle|\; 5\frac{5}{14} \right|$ - $\left| 6\frac{1}{14} \;\middle|\; 6\frac{11}{14} \;\middle|\; 7\frac{1}{2} \right|$। अरिट्ठो देवसमिदो बम्हो बम्हुत्तरो त्ति चत्तारि बम्ह-बम्हुत्तरकप्पेसु पत्थडा। एदेसिमाउणं[2] संदिट्ठी एसा- $\left| 8\frac{1}{4} \;\middle|\; 9 \;\middle|\; 9\frac{3}{4} \;\middle|\; 10\frac{1}{2} \right|$ बम्हणिलओ लंतओ त्ति लांतय-काविट्ठेसु दोण्णि पत्थडा। तेसिमाउआणमेसा संदिट्ठी- $\left| 12\frac{1}{2} \;\middle|\; 14\frac{1}{2} \right|$। महासुक्को त्ति एक्को चेव पत्थडो सुक्क-महासुक्ककप्पेसु। तम्हि आउअस्स एसा संदिट्ठी $\left| 16\frac{1}{2} \right|$।

इस आर्ष वचनसे जाना जाता है कि सौधर्म-ईशान कल्पमें इकतीस प्रस्तर हैं।

अंजन, वनमाल, नाग, गरुड, लांगल, बलभद्र और चक्र, ये सात प्रस्तर सनत्कुमार-माहेन्द्र कल्पोंमें हैं। उनमें आयुका प्रमाण लानेपर मुख अढाई सागरोपम भूमि साढे सात सागरोपम और उत्सेध सात है। (अतएव यहां वृद्धिका प्रमाण हुआ ($७\frac{१}{२} - २\frac{१}{२}$) $\div ७ = \frac{५}{७}$, यह प्रथम प्रस्तरका आयुप्रमाण हुआ $\frac{५}{२} + \frac{५}{७} = \frac{४५}{१४} = ३\frac{३}{१४}$। इसी प्रकार वृद्धिमें इष्ट प्रस्तरकी संख्याका गुणा करके मुखमें जोडनेसे वनमालमें आयुका प्रमाण $३\frac{१३}{१४}$, नागमें $४\frac{९}{१४}$, गरुडमें $५\frac{५}{१४}$, लांगलमें $६\frac{१}{१४}$, बलभद्रमें $६\frac{११}{१४}$ और चक्रमें $७\frac{१}{२}$ आता है।

अरिष्ट, देवसमित, ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर, ये चार विमान-प्रस्तर ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर कल्पोंमें हैं। इनकी आयुका प्रमाण मुख $७\frac{१}{२}$, भूमि $१०\frac{१}{२}$, और उत्सेध ४ लेकर पूर्वोक्त विधिके अनुसार अरिष्टमें $७\frac{१}{२} + \frac{३}{४} = ८\frac{१}{४}$, देवसमितमें $\frac{३}{४} \times २ + ७\frac{१}{२} = ९$, ब्रह्ममें $\frac{३}{४} \times ३ + ७\frac{१}{२} = ९\frac{३}{४}$ और ब्रह्मोत्तरमें $\frac{३}{४} \times ४ + ७\frac{१}{२} = १०\frac{१}{२}$ आता है।

ब्रह्मनिलय और लांतव, ये लांतव-कापिष्ठ कल्पोंमें दो विमान-प्रस्तर हैं, जिनमें पूर्वोक्त विधिके अनुसार आयुका प्रमाण इस प्रकार है--($१४\frac{१}{२} - १०\frac{१}{२}$) $\div २ = २$ हा. वृ.। $२ \times १ + १०\frac{१}{२} = १२\frac{१}{२}$, $२ \times २ + १०\frac{१}{२} = १४\frac{१}{२}$ अर्थात् ब्रह्मनिलयमें $१२\frac{१}{२}$ और लांतवमें $१४\frac{१}{२}$ सागरोपम है।

शुक्र-महाशुक्र कल्पोंमें महाशुक्र नामका एक ही प्रस्तर है। वहां आयुके प्रमाणकी यह संदृष्टि है $१६\frac{१}{२}$ सा.।

---

१ अ. क. प्रत्योः 'लंगको' इति पाठः।

२ क. प्रतौ 'एदेसुमाउआणं' इति पाठः।

सहस्सारो त्ति एक्को चेव पत्थडो सदर-सहस्सारकप्पेसु। तस्स आउअस्स संदिट्ठी |१८/१/२|।

आणदप्पहुडि जाव अवराइदविमाणवासियदेवा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ३४ ॥

सुगममेदं।

जहण्णेण अट्ठारस वीसं बावीसं तेवीसं चउवीसं पणुवीसं छव्वीसं सत्तावीसं अट्ठावीसं एगुणत्तीसं तीसं एक्कत्तीसं बत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ३५ ॥

आणद-पाणदकप्पे सादृअट्ठारससागरोवमाणि। आरण-अच्चुदकप्पे समयाहिय-वीसं सागरोवमाणि। उवरि जहाकमेण णवगेवज्जेसु बावीसं तेवीसं चउवीसं पणुवीसं छव्वीसं सत्तावीसं अट्ठावीसं एगुणत्तीसं तीसं सागरोवमाणि समयाहियाणि। णवाणुद्दिसेसु एक्कत्तीससागरोवमाणि समयाहियाणि। चदुसु अणुत्तरेसु बत्तीसं सागरोवमाणि

शतार-सहस्रार कल्पोंमें सहस्रार नामका एक ही प्रस्तर है। उसमें आयुप्रमाण है १८½ सा.।

आनत कल्पसे लेकर अपराजित कल्प तकके विमानवासी देव वहां कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ३४ ॥

यह सूत्र सुगम है।

जघन्यसे सातिरेक अठारह, बीस, बाईस, तेईस, चौबीस, पच्चीस, छब्बीस, सत्ताईस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस, इकतीस, व बत्तीस सागरोपम काल तक जीव क्रमशः आनत आदि अपराजित विमानवासी देव रहते हैं ॥ ३५ ॥

आनत-प्राणत कल्पमें जघन्य आयु-प्रमाण साढे अठारह सागरोपम व आरण-अच्युत कल्पमें एक समय अधिक बीस सागरोपम है। इससे ऊपर नव ग्रैवेयकोंमें क्रमशः सुदर्शनमें बाईस, अमोघमें तेईस, सुप्रबुद्धमें चौबीस, यशोधरमें पच्चीस, सुभद्रमें छब्बीस, विशालमें सत्ताईस, सुमनसमें अट्ठाईस, सोमनसमें उनतीस और प्रीतिकरमें तीस सागरोपमप्रमाण जघन्य आयुस्थिति है। ग्रैवेयकोंसे ऊपर अर्चिष्, अर्चिमाली आदि नव अनुदिशोंमें एक समय अधिक इकतीस सागरोपमप्रमाण जघन्य आयुस्थिति है। अनुदिशोंसे ऊपर विजय, वैजयन्त जयन्त और अपराजित, इन चार अनुत्तर विमानोंमें